ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान
बिसवाँ सीतापुर

"परम ज्ञान"

तीन छोडि चौथा पद दीन्हा, सत्यनाम, सतगुरु गति चीन्हा

क्रम संख्या	पहला पद	दूसरा पद	तीसरा पद	चौथा पद
1	शरीर	मन	सुरत	आत्मा
2	कलयुग	द्वापरयुग	त्रेतायुग	सतयुग
3	मत्युलोक	देवलोक	ब्रहमलोक	सत्यलोक
4	पिण्ड	अंड	ब्रह्माण्ड	परमधाम
5	नर्क	स्वर्ग	अपवर्ग	परमपद
6	जीव	देवता	त्रिदेव	परमात्मा
7	नर	देव	ब्रहम	नारायण
8	स्थूल	कारण	महाकारण	विदेही
9	संसार	रूप	नाम	अनाम अरूप सत्यनाम
10	इन्द्रिय ज्ञान	बिचार	कर्ता पुरुष	पूर्ण अकर्ता
11	. शरीर के चक्र	प्रकाश	अनहदनाद	निर्वाण पद
12	क्रिया कर्म	ध्यान	सुरत-शब्द योग	सहजयोग
13	संसार	प्रकृति	पुरुष	सतपुरुष
14	साकार	निराकार	अपरोक्ष	अव्यकत
15	दो आँखे	मन की तीसरी आँख	प्रज्ञा चक्षु	बिवेक दृष्टि
16	शरीर से बाहर का ज्ञान	शरीर के अन्दर	शरीर के अन्दर	न अन्दर न बाहर
17	पांच तत्व	25 पचीस तत्व	तत्वों से बना	अतत्व
18	गतिशील	गतिमान	गतिमान	अचल पद

• तीन पद क्यों छोड़े :-

(I) यदि हमें परमात्मा या परमपद खोजना है तो वह हमें चौथे पद में ही मिलेगा !

(II) तीसरा पद ब्रम्हलोक है, यदि हमको ब्रम्ह खोजना है तो हम तीसरा पद खोजे !!

(III) दूसरा पद देवलोक है, यदि हमें देवताओं को खोजना है तो हम दूसरा पद खोजें !!

(IV) पहला पद संसार है, पकड़ना संसार को है, संसार को छोड़ना नहीं है क्योंकि सब कुछ मिलेगा संसार से ही !!

नर समान नहिं कौनेउ देंही !

जीव चराचर जाँचत जेंही !!

*चौथा पद ही क्यों खोजें :-

(I) जीव के कल्याण के लिए जानने योग्य यदि कोई चीज है तो वह केवल आत्मा ही है और कोई दूसरी चीज है ही नहीं !

(II) इस्लाम में भी पहला कलमा -

ला इलाह इलल्लाह, मोहम्मद रसूल अल्लाह !

नहीं है कोई इबादत करने के योग्य सिवा उस अल्लाह के!

• कैसे खोजें :- केवल जीव को आत्मा के सन्मुख होना है दूसरा कोई उपाय है ही नहीं !

- सीढ़ियों **द्वारा** नर्क, स्वर्ग, अपवर्ग पार करके " पारब्रम्ह " तक " जीव " को पहुँचना :-

नर्क, स्वर्ग, अपवर्ग, निषेनी !

ज्ञान, बिराग, भक्ति, सुखदेनी !!

तीनों सीढ़ी यदि चढ़े, पार करे जो जीव !

" पारब्रम्ह " सन्मुख खड़े, जीव अवस्था पीव !!

ब्रम्हज्ञान की सीढ़ियां, बिरला जीव चढ़े !

पार करे सब सीढ़ियां, भवसागर पार करे !!

मार्ग दो है ईश तक, मन में करो प्रविष्ट !

पहला मार्ग है सीढ़ियां, दूसर मार्ग है लिफ़्ट !!

पारब्रम्ह ही ईश है, जीव का एक ही लक्ष्य !

जीव, ईश दोनों मिले, दोनों हो प्रत्यक्ष !!

पहली सीढ़ी बाह्य है, यह साकार का ज्ञान !

कथा, भागवत, तीर्थव्रत, नियम, धर्म सब जान !!

क्रिया, कर्म इंद्रिय करे, पूजा बाह्य ही होय !

देवी, देवता काल्पनिक, कर्मकाण्ड यह होय !!

अध्ययन करो शरीर में, इसमें पद है तीन !

निराकार की भक्ति है, यही है सीढ़ी तीन !!

इंद्रिय, मन और सुरत की, सीढ़ी चढ़ना तीन !

सुमिरन, ध्यान और भजन से, पार हो सीढ़ी तीन !!

विचार को ही सुमिरन कहें, कहें प्रकाश को ध्यान !

अनहदनाद ही भजन है, तीनों को पहिचान !!

सुमिरन तब तक ही करो, प्रकट प्रकाश न होय !

ध्यान प्रकाश का तब तक करो, अनहद प्रकट न होय !!

अनहद को तब तक सुनो, जब तक प्रकट न शब्द !

शब्द प्रकट सब छोड़कर, साधो एक ही शब्द !!

यही शब्द है आत्मा, यही है पद निर्वाण !

क्रिया, कर्म सब छोड़ दो, सार यही है ज्ञान !!

"परम ज्ञान"

ब्रहम और परमात्मा में असमानता

क्रम संख्या		ब्रहम	परमात्मा
1	तत्व	तत्व हैं	अतत्व है
2	व्यापकता	इलेक्ट्रॉन, प्रोट्रान,- न्यूट्रान के रूप मे व्याप्त	विभू" के रूप में व्याप्त
3	कण-कण में	कण-कण मे व्याप्त है	कण-कण में नहीं है
4	कर्ता	कर्ता हैं	अकर्ता है
5	परिवर्तन	परिवर्तन होता रहता हैं	कोई परिवर्तन नहीं होता है
6	खण्ड	खण्ड-खण्ड में है	पूर्ण अखण्ड है
7	गति	सदैव गति होती रहती है	अचल है
8	आधार	ब्रहम का आधार परमात्मा है	निरालम्ब, कोई आधार नहीं है
9	कर्म	कर्म होता रहता है	अकर्म स्थित है
10	देखना	आँखों से देखा जा सकता है।	विवेक दृष्टि से सद्गुरु लखाता है
11	रचना	. रचना करता है। सृष्टि की रचना होती रहती है	कोई रचना नही करता है स्वतः ही ब्रहमलोक बनता रहता हैं

12	रूप	(ब्रहमा, विष्णु, महेश) का सम्लित रूप ब्रहम है।	क्षीर सागर के रूप में है
13	मानस रोग	मानस रोग रहते हैं	. कोई मानस रोग नहीं रहते हैं
14	तीन ताप	तीन तापों का असर होता है	तीन तापों से न्यारा है
15	आदि	आदि नही है	आदि है
16	स्पर्श	स्पर्श करता है।	किसी को भी स्पर्श नहीं करता है। सभी से न्यारा है।
17	प्रकट	कण-कण में शब्द प्रकाश के रूप में व्याप्त है प्रकट किया जा सकता है	केवल मनुष्य में ही प्रकट हो सकता हैं आत्मघट प्रकट करना पड़ता हैं
18	द्वैत	द्वैत है, अकेला नही रह सकता है।	अद्वैत है।
19	कहाँ है	परिध ही है	केन्द्र, किलिया, धुरी यही है
20	समानता (सोहं रूप में)	अनादि है। अनन्त है सर्वत्र है	अनादि है। अनन्त है सर्वत्र है

यह भी जानो :-

साधक –जो रोज साधना करता है !

भक्ति - तीसरे पद (ब्रम्हलोक) की साधना

हरि - विष्णु या राम

हर - शिव या शंकर

नाम - जो रोज जपना पड़ता है !

सत्यनाम - जो केवल एक बार ही जपना काफी

जासु नाम सुमिरत एक वारा !

उतरहिं नर भव सिंधु अपारा !

गुरु - जो नाम देते है !

सद्गुरु - जो सत्यनाम देते है !

अनीश्वर - नाम है (ईश्वर जैसा है पर ईश्वर नहीं है)

ईश्वर - सत्यनाम है, पारब्रम्ह है !

ब्रम्ह - सद्गुरु वही कहावै,
इन नैनन ब्रम्ह लखावै !!

राम का भजन - सत्यनाम (चौथापद)
अद्वैत

शंकर का भजन - नाम, रूप (तीसरापद)
द्वैत

तीन ताप -(i) दैविक ताप - दैवी आपदा !

(ii) दैहिक ताप - शरीर के

अंदर वाले !

(iii) भौतिक ताप - शरीर के

बाहर वाले !

अनन्य का अर्थ - चौथे पद को प्राप्त

करने के लिए तीन पदों

की साधना छोड़नी है !

* पहला पद - पृथ्वी शांति :
* दूसरा पद - देव शांति :
* तीसरा पद - ब्रम्ह शांति :

विमुख - जो तीन पदों की साधना करता है!

सन्मुख - जो केवल चौथे पद की साधना करता है!

परिधि - तीन पद !

केंद्र - चौथा पद!

भवसागर - तीन पद, मैं पद, कर्म ज्ञान और भक्ति वाले पद !

- विदेह गति -

यह " जीव " के चौथे पद के सन्मुख होने की स्थित है, इस स्थित का नाम :-

(I) विदेह गति है !

(II) राधा स्वामी स्थित है, यही चौथा लोक राधा स्वामी धाम है !

(III) परमगति है !

(IV) निर्वाण पद है !

(V) जीव के परिधि से केंद्र पर आने की स्थित है !

(VI) तत्व से अतत्व होने की स्थित है !

(VII) भवसागर और चौरासी बंधनों से पार होने की स्थित है !

(VIII) जीव के नर से नारायण बनने की स्थित है !

(IX) जीव के पीव बनने की स्थित है !

(X) विवेक दृष्टि प्राप्त होने की और मति सुमति होने की स्थित है !

(XI) अचलपद में जीव के स्थित होने की स्थित है !

(XII) जीव के मोक्ष और मुक्ति की स्थित है !

(XIII) यह अकर्म स्थित है !

(XIV) यह माया से पार की स्थित है!

(XV) यह अज्ञानी से ज्ञानी होने की स्थित है !

(XVI) यह **अविद्या** से **विद्या** में आने की स्थित है !

(XVII) यह " जीव " के जागने की स्थित है !

(XVIII) यह सत्य को जानने की स्थित है !

(XIX)यह जीव के पूर्ण होने की स्थित है !

(XX) यह त्रिवेणी और भागीरथी प्रकट करने की स्थित है !

(XXI)यह सभी मानस रोग समाप्त होने की स्थित है !

(XXII) यह विमुख से सन्मुख होने की स्थित है !

(XXIII) यह सभी जन्मों के पाप नष्ट होने की स्थित है !

(XXIV) जैसे हम अपने मोबाइल को लॉक से अनलॉक करते है, यह जीव के अनलॉक होने की स्थित है !

(XXV) यह जीव के परमात्मा द्वारा संचालित होने की स्थित है !

(XXVI) यह तीनों " मैं " पद के पार की स्थित है !

(XXVII) यह जीव के परमधार से मिलकर एक होने की स्थित है !

(XXVIII) यही एकात्म अवस्था है !

(XXIX) यही स्थिर प्रज्ञ अवस्था है !

(XXX) यही अद्वैत अवस्था है !

नोट :- (i) कोई पूर्ण सद्गुरु खोजकर

चौथे पद का भेद जानों !

(ii) जीव को चौथे पद के सन्मुख करो !

1. अज्ञान, **अविद्या** दूर करे, तेरा निशदिन गुण गान करे !

- अज्ञान क्या है- परमात्मा को न जानना !
- **अविद्या** क्या है- परमात्मा को न जानना !
- अंधकार क्या है- परमात्मा को न जानना !

2. भ्रम क्या है- (i) हम परमात्मा के धोखे माया पकड़े है !

(ii) परमात्मा एक है, हम अनेक को पकड़े हैं !

(iii) हम ईश्वर के धोखे अनीश्वर को पकड़े है !

3. अनीश्वर क्या है- ईश्वर जैसा है, परन्तु ईश्वर नहीं है !

4. हम पढ़े, लिखे, **विद्वान** बने, विद्या का विमल प्रचार करे !

विद्या क्या है- सा **विद्या** या विमुक्तये !

विद्या वही है जिससे हमारे जीव, मन,बुद्धि चित्त और अहंकार सभी में परिवर्तन हो जाय, कायाकल्प हो जाय !

5. कायाकल्प किसका होना है:-

(I) जीव का - जीव से पीव !

(II) मन का - कौवा से हंस !

(III) बुद्धि का - कुमति से सुमति !

(IV) चित्त का - विचारातीत, भावातीत !

काम बदल जाता है - नाम में !

क्रोध बदल जाता है - दया में !

लोभ बदल जाता है - दान में !

मोह बदल जाता है - प्रेम में !

अहंकार बदल जाता है - शून्य में,

समर्पण में !

मद बदल जाता है - नम्रता में !

मत्सर (ईर्ष्या, द्वेष) - परोपकार में !

6. विद्या कैसे प्राप्त हो, कायाकल्प कैसे होगा :-

(I) केवल परमात्मा के सन्मुख होना है !

(II) गुरु, ग्रह गये पढ़न रघुराई,

अल्प काल विद्या सब आई

7. माया क्या है:-तीन लोक माया के है !

(I) मृत्वलोक

(II) देवलोक

(III) ब्रम्हलोक

8. * मायाधीश क्या है:- परमात्मा, अमरपद, चौथापद !

- अमृत क्या है:- परमात्मा, अमरपद, चौथापद !
- सुख और शांति का सागर क्या है:- परमात्मा, अमरपद, चौथापद !
- तीन लोकों का मालिक कौन है:- परमात्मा, अमरपद, चौथापद !

9. पुरुष और प्रकृति का काम क्या है:-

(I) रचना करना

(II) सब कुछ देना

(III) रक्षा करना

10. प्रकृति कैसे देती है:- पुरुष की आज्ञा से !

11. प्रकृति से कैसे ले:-

(I) मन को शून्य करके !

(II) जिस वस्तु को लेना है उसी पर सुरत को टिका कर !

12. सुमिरन क्या है:- जो विचार आते है, उस समय हम उस वस्तु का सुमिरन कर रहे होते हैं !

अतः जो हमें लेना है, उसी का सुमिरन करें !

13. ध्यान क्या है:- सुरत को किसी वस्तु पर टिकाना ध्यान है !

14. भजन कितने प्रकार का होता है:-

(I) शंकर का भजन:- संसार प्राप्त करने के लिए !

(II) राम का भजन:- (i) परमपद प्राप्त करने के लिए !

(ii) कायाकल्प करने के लिए !

(iii) भवसागर पार करने के लिए !

(iv) परमात्मा के सन्मुख होने के लिए !

15. (i) ब्रम्ह की भक्ती के लिए:- (ब्रम्ह ईश्वर जैसा है परन्तु ईश्वर नही, इसे ही अनीश्वर कहते हैं)

*शंकर का भजन:-

औरो एक गुप्त मत, सवहिं कहहूँ कर जोरि !

शंकर भजन बिना नर, भगति न पांवहि मोरि !!

* राम का भजन:-

(II राम भजन बिन सुनहु खगेशा, मिटहि न जीवन केर कलेशा !

(II) श्री राम चंद्र कृपालु भजमन, हरण भव भय दारुणम !

(III) रामचंद्र के भजन बिन, जो चह पद निर्वाण !

ज्ञानवंत वह है नही, पशु बिन पूंछ विषाण !!

(IV) बिन हरि भजन न भव तरइ, यह सिद्धांत अपेल!

* राम का भजन कैसे प्राप्त हो:-

भजन, राम, हरि एक है, वही है पद निर्वाण !

आतमघट भी वही है, सन्मुख होकर जान !!

16. (I) शंकर का भजन:- ब्रम्हज्ञान है !

(II) राम का भजन:- आत्मज्ञान है !

17. शंकर का भजन और राम (हरि) के भजन दोनों में सत्य कौन है और माया कौन है ! शंकर जी पार्वती जी से कहते है:-

उमा कहहु मै अनुभव अपना, सत हरि भजन जगत सब सपना !

18. " जीव " और " जीवन " के कल्याण के लिए राम अर्थात् " हरि " का भजन ही श्रेष्ठ है !

सुरेशादयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उ० प्र०)

सम्पर्क सूत्र - 9984257903